कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 2

MJY–003

स्नातकोत्तर कला उपाधि (ज्योतिष)
(एम. ए. जे. वाई.)
सत्रांत परीक्षा
जून, 2024
एम.जे.वाई.–003 : पञ्चाङ्ग एवम् मुहूर्त्त

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र कुल* **दो** *खण्डों में विभाजित है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।* ***'क'*** *एवं* ***'ख'*** *खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड-क

1. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक दीजिए : 3×20=60

(क) पञ्चाङ्ग का परिचय, प्रयोजन और अङ्गों का सविस्तार वर्णन कीजिए।

(ख) करण किसे कहते हैं ? साधन करते हुए विष्टिकरण का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(ग) नक्षत्रों की ध्रुवादि संज्ञाओं का वर्णन कीजिए।

(घ) पञ्चाङ्ग का सैद्धान्तिक विश्लेषण कीजिए।

(ङ) ग्रहों के कक्षा क्रम के अनुसार वार क्रम एवं काल होरा का सविस्तार वर्णन कीजिए।

(च) व्रत, पर्व एवं उत्सवों का शास्त्रीय दृष्टि से निर्णय करते हुए सविस्तार विवेचन कीजिए।

खण्ड-ख

2. किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×10=40

(क) तिथि स्वामी एवं नन्दादि तिथियों का वर्णन कीजिए।

(ख) वार एवं नक्षत्र के संयोग से बनने वाले योगों का वर्णन कीजिए।

(ग) नक्षत्रों की अन्धादि संज्ञाओं का वर्णन कीजिए।

(घ) जन्म नक्षत्र का चरण ज्ञात करने की विधि को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ङ) योगों का परिचय देते हुए महत्त्व निरूपित कीजिए।

(च) वधू प्रवेश और गृहारम्भ मुहूर्त के स्वरूप को निरूपित कीजिए।

(छ) षोडश संस्कारों में से किन्हीं **पाँच** संस्कारों का मुहूर्त सहित विवेचन कीजिए।

(ज) शास्त्रीय दृष्टि से ग्रहण काल में कर्त्तव्याकर्त्तव्य का विवेचन कीजिए।